श्रीनवद्वीपधाम महात्मय

SGD

श्रीलगुरुदेव

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्रीईशोद्यान

यह स्थान श्रीमन्महाप्रभु की माध्याहिक लीलाभूमि है। श्रीईशोद्यान के सम्बन्ध में श्रील भक्ति विनोद ठाकुर 'श्रीनवद्वीप भाव तरंग में लिखते हैं -

'मायापुर - दक्षिणांशे जाहवीर तटे ।
सरस्वती संगमेर अतीव निकटे ।।

ईशोद्यान नाम उपवन सुविस्तार ।
सर्वदा भजनस्थान हउक आमार ।।

ये वने आमार प्रभु श्रीशचीनन्दन ।
मध्याह करेन लीला ल 'ये भक्तजन ।।

वनशोभा हेरी’ राधाकुण्ड पड़े मने।
से सब स्फुरुक् सदा आमार नयने ।।

वनस्पति कृष्णलता निबिड़ दर्शन।
नाना पक्षी गाय तथा गौर - गुण गान ।

सरोवर श्रीमन्दिर अति शोभा पाय ।
हिरण्य - हीरक - नील- पीत् - मणि
भाय ।।

बहिर्मुख जन मायामुग्ध आँखिद्वये ।
कभु नाहि देखे सेइ उपवनचये ।।

देखे मात्र कण्टक- आवृत
भूमिरखण्ड।

तटिनी - वन्यार वेगे सदा लण्डभण्ड।।

अर्थात् श्रील भक्ति विनोद ठाकुर जी कहते हैं कि श्रीमायापुर दक्षिण भाग में जाहवी नदी के किनारे व सरस्वती नदी के संगम के के बिल्कुल पास ही ईशोद्यान नाम से बड़ा सुन्दर उपवन है जो सर्वदा मेरा भजन-स्थान हो। इसी उपवन में श्रीशचीनन्दन प्रभु जी ने मध्याह में भक्तजनों के साथ लीला की थी। वन की शोभा देखकर मन में राधाकुण्ड का स्मरण होता है, जिसकी मेरे नयनों में सदा स्फूर्ति प्राप्त हो। घनी - घनी वनस्पति एवं कृष्णलताएँ यहाँ

पर हैं, जहाँ विभिन्न प्रकार के पक्षी श्रीगौर - गुण गान करते रहते हैं। सुवर्ण, हीरक, नील, पीत आदि मणियों से जड़ित श्रीमन्दिर व सरोवर अति शोभा पा रहे हैं। मायामुग्ध बहिर्मुख जीव, जड़ीय नेत्र से उस उपवन की शोभा को नहीं देख सकते हैं। वे वहाँ पर कांटों से आवृत भूमिखण्ड को एवं बाढ़ के वेग से सब कुछ नष्ट हुआ सा देखते हैं।

श्रीईशोद्यान के दर्शनीय स्थानसमूह :

1. **श्रीक्षेत्रपाल शिवालय** — नाव पार करके, प्रथम मुख्य द्वार के निकट तथा बायीं ओर श्रीधाम-रक्षक

के रूप से श्रीक्षेत्रपाल शिव का मन्दिर पड़ता है।

2. **श्रीभक्तिसौध भजनकुटीर** — श्रीक्षेत्रपाल शिवालय के पूर्व तरफ श्रीभक्तिसौध भजन कुटीर है। -

3. **रूपानुग भजन आश्रम** — इस आश्रम को परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्तिविलास भारती महाराज ने स्थापित किया है। आश्रम के श्रीमन्दिर में श्रीगुरु - गौरांग-राधाकृष्ण जी की नित्य सेवा होती है।

4. उसके बाद, परमपूज्यपाद श्रीमद् भक्त्यालोक परमहंस महाराज

का समाधि मन्दिर है। श्रीमन्दिर में श्रीगौरगदाधर श्रीविग्रह पूजित होते हैं।

5. **श्रीकृष्णचैतन्य मठ** — इस मठ के प्रतिष्ठाता, परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्तिकमल मधुसूदन महाराज हैं। आश्रम में श्रीगुरू - में गौरांग - राधाकृष्ण को नित्य पूजा होती है।

6. **श्रीगौरांग गौड़ीय मठ** - - इस मठ के प्रतिष्ठाता, परम पूज्यपाद श्रीमद् भक्तिसौरभ भक्ति सार महाराज हैं। आश्रम में षड़भुज - महाप्रभुजी की नित्य पूजा होती है।

7. **श्रीभागवत मठ —** इस मठ के प्रतिष्ठाता, नित्यलीला प्रविष्ट श्रीमद् भक्ति विचार यायावर महाराज थे। मठ में श्रीगुरु- गौरांग - श्रीराधाकृष्ण जी के विग्रहों की पूजा होती है। -

8. **श्रीसारस्वत गौड़ीय मठ –** इस मठ के प्रतिष्ठाता, नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीमद् भक्तिशरण शान्त महाराज थे। मठ में श्रीगौरांग - महाप्रभु जी की पूजा होती है।

9. **श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ —** श्रीईशोद्यान में ही यह मठ प्रतिष्ठित है। इस स्थान पर नवधा - भक्ति के प्रतीक स्वरूप नौ - शिखर वाला

अति सुशोभित श्रीमन्दिर है, जहाँ श्री श्रीगुरु- गौरांग - श्रीराधामदनमोहन जी एवं पंचतत्व के श्रीविग्रहगण सेवित होते हैं। अखिल भारतीय श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता एवं अध्यक्ष, नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद परमहंस 108 श्री श्रीमद् भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज का समाधि मन्दिर प्रवेश द्वार के उत्तर की तरफ अवस्थित है। इस मन्दिर में परम आराध्यतम् श्री श्रीलगुरु महाराज ॐ विष्णुपाद 108 श्री श्रीमद् भकित दयित माधव गोस्वामी महाराज जी के श्रीविग्रह नित्य सेवित होते हैं।

10. **श्रीनन्दनाचार्य भवन —** इस स्थान के प्रतिष्ठाता, नित्यलीला - प्रविष्ट श्रीमद् भक्ति सारंग गोस्वामी महाराज थे। श्रीमन्दिर में श्रीगौर - नित्यानन्द जी श्रीविग्रह सेवित होते हैं।

11. **श्रीचैतन्य चन्द्रोदय मन्दिर —** इस स्थान के प्रतिष्ठाता, नित्यलीला प्रविष्ट श्रीमद् भक्ति वेदान्त स्वामी महाराज थे। उन्होंने पाश्चात्य देश एवं भारतवर्ष में श्रीचैतन्यवाणी का प्रचार किया था जिस कारण बहु पाश्चात्य देशीय पुरुष एवं महिलाएँ श्रीगौड़ीय वैष्णवधर्म को स्वीकार कर, ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करते

हुए ऊँचे स्वर से हरिनाम करते हैं। श्रीमन्दिर में श्रीराधाकृष्ण जी के श्रीविग्रह विराजमान हैं।

* * * * * * *

श्रीलगुरुदेव